जीवन विद्या शिविर

व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक
जीवन में सफलता
हेतु

108 महत्वपूर्ण सूत्र

- स्त्रोत -

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन

— प्रणेता —

श्री ए. नागराज
अमरकंटक (म.प्र.)

अभ्युदय संस्थान

कुम्हारी - अहिवारा मुख्य मार्ग में कुम्हारी से ठीक 12 किलोमीटर पर

जिला - दुर्ग, फोन :- 07821-58222,

- रायपुर सम्पर्क -

(0771) 523836, 524239, 254002, 254502

* मानव जाति के पास मात्र दो ही प्रश्न हैं।

  ......**मैं क्यों जी रहा हूं ?**

  ......**सही जीने का तरीका क्या है ?**

  अर्थात कैसे जीना है ?

* धरती पर समस्त मानव का एक ही लक्ष्य है – सभी निरन्तर (हमेशा) सुख/शान्ति और समृद्धि पूर्वक जीना चाहते हैं।

निरन्तर सुख पूर्वक जीने के लिए कुछ सूत्र आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं :-

1. जाने हुए को मान लो। माने हुए को जान लो।
2. भूमि एक, राष्ट्र अनेक।
   मनुष्य की जाति एक, कर्म अनेक।
   मानव का धर्म एक, मत अनेक।
   ईश्वर एक, देवता अनेक।
3. मनुष्य मात्र समस्त प्रयास तृप्ति अथवा सुख के लिए है। निरन्तर सुख ही मानव धर्म है।
4. सृष्टि का चरम लक्ष्य ही विश्राम है, इसलिए विश्राम के लिए मनुष्य व्याकुल रहता है।
5. व्यवहार में प्रमाणित न होने वाली कल्पनाएं स्वपन हैं।
6. मनुष्य जाति सही में एक तथा गलती में अनेक है।
7. न्यायपूर्ण व्यवहार एवं धर्मपूर्ण विचार की प्रतिक्रिया ही सुख है।
8. ईश्वर सर्वत्र एक सा विद्यमान है।
9. ईश्वर सर्वत्र एक सा बोधगम्य है।
10. अपने महत्व को जानने व पहचानने पर ही विश्राम (आनन्द) की उपलब्धि संभव है।
11. समाधान की ओर विश्राम का अनुभव है, तथा समस्या की ओर श्रम का अनुभव है।
12. मानव समाज के गठन का मूल उद्देश्य भय से रहित होना ही है, अर्थात विश्वासपूर्ण होना है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

13. धर्मपूर्ण विचार तथा न्यायपूर्ण व्यवहार से ही सत्य की अनुभूति संभव होती है।

14. जीने दो और जियो।

15. स्वयं की उपयोगिता को सिद्ध करना ही तृप्ति का आधार व प्रमाण है।

16. स्वयं का मूल्यांकन कर लो – गलती, अपराध नहीं करोगे, फलतः दुःखी, प्रताड़ित और दरिद्र नहीं होंगे।

17. परमात्मा, कार्य–व्यवहार काल में नियम के रूप में प्राप्त है।

परमात्मा, आचरण काल में न्याय के रूप में प्राप्त है।

परमात्मा, विचार काल में समाधान के रूप में प्राप्त है।

परमात्मा, अनुभव काल में आनन्द के रूप में प्राप्त है।

18. मानव का समूचा व्यवहार कृतज्ञता तथा कृतघ्नता के आधार पर ही निर्भर करता है।

19. ईश्वर में समझ ही ज्ञान तथा ज्ञान का आधार ईश्वर ही है।

20. पूर्ण विश्राम ही दुःख का उन्मूलन तथा मोक्ष है।

21. मनुष्य के पूर्ण सुखी होने के लिये बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि आवश्यक है।

22. जो जितना भ्रम और भय का पात्र है, उसने साधनों को सुखी होने के लिए उतना ही महत्वपूर्ण समझा है।

23. जिसमें सुख की निरन्तरता नहीं है, उसी में सुख पाने का प्रयास ही बन्धन है।

24. जिसमें सुख स्वभाव है, उसका अनुभव ही मोक्ष है।

25. जो जिसका अपव्यय करेगा, वह उससे वंचित हो जाएगा।

26. मनुष्य ह्रास में आसक्ति के फलस्वरूप बल, बुद्धि, रूप, पद और धन का अपव्यय करता है।

27. स्वयं की अक्षमता का प्रदर्शन क्रोध है।

28. सद्व्यय ही कमाई है और अपव्यय ही गंवाई है।

29. तन, मन; धन का ही व्यय किया जाता है।

30. संग्रह से लोभ, द्वेष से विरोध, अविद्या से अज्ञान, अभिमान से उद्दण्डता और भय से आतंक का जन्म होता है, जो वैचारिक क्लेश है।

31. लोभ, विरोध, अज्ञान, उदण्डता, आतंक सभी सूचनाएं हैं कि समाधान उपलब्ध नहीं हुआ।

32 जो स्वयं दुःखी है, वह दूसरों को दुःखी करेगा ही, क्योंकि यह नियम है कि जिसके पास जो है, वह उसे बांटेगा ही।

33. मानव 4 प्रकार के भय से पीड़ित है – प्राण भय, पद भय, मान भय, धन भय।

34. प्राकृतिक सम्पदा का सदुपयोग अथवा दुरूपयोग से ऋतु सन्तुलन अथवा असंतुलन सिद्ध होता है।

35. रूप, बल एवम् बुद्धि का विकास आहार, विहार व व्यवहार की संयमता पर है।

36. मानव गलती करने का अधिकार लेकर तथा सही करने का अवसर व साधन लेकर जन्मता है।

37. सम्बन्ध में भाव पक्ष का तिरस्कार ही उस सम्बन्ध का शोषण है।

38. यदि समस्या है तो समाधान है ही।

39. जड़ मरण धर्मा, चैतन्य अमरत्वधर्मा तथा ज्ञान नित्यधर्मा है।

40. जो सुखी नहीं है, वह दूसरों को सुखी नहीं कर सकता।

41. यर्थाथता से भिन्न अवधारणा ही भ्रम है।

42. साधन का सदुपयोग ही विकास है और उसका दुरुपयोग ही ह्रास है।

43. पूर्ण–बोध अर्थात सुख की उपलब्धि ही रहस्य से मुक्ति है।

44. मनुष्य के आहार, विहार व व्यवहार से ही उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन होता है। यही मानव की सुन्दरता है।

45. परमानन्द की उपलब्धि ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

46. विश्राम (समाधि) या समाधांन बौद्धिकता की सीमा है।

47. भ्रम = समझ में कमी = अहंकार = शंका = भय = दु:ख। भ्रम का अस्तित्व नहीं है।

48. समाधान = क्यों, क्या, कैसे, कितना = समझ = रहस्य मुक्ति = अभय = विश्वास = सुख/शान्ति।

49. शिक्षा का प्रयोजन व्यक्ति में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में परस्पर विश्वास (अभय) तथा सभी व्यवस्थाओं में तालमेल (सह-अस्तित्व) स्थापित करने हेतु प्रत्येक मानव को सक्षम बनाना है।

50. गुरु मुल्य (बड़ा सुख) में लघु मूल्य (छोटा सुख) समाया रहता है। (अर्थात स्वयं में तालमेल व दूसरों के साथ तालमेल का सुख मिलने से इन्द्रियों से सुख पाने की निर्भरता (दबाव) सहज रुप से कम होती जाती है।)

51. शिष्य का जीवन गुरु द्वारा कराये गये अध्ययन के द्वारा अर्थबोध सम्पन्नता से सफल है।

52. गुरु का जीवन अनुभव को प्रमाणिकता पूर्वक अध्ययन कराने से सफल है।

53. पुरूष का जीवन यतित्व से सफल है। पुरुष में समझदारी को प्रमाणित करना यतित्व है।

54. स्त्री का जीवन सतीत्व से सफल है। स्त्री में समझदारी को प्रमाणित करना सतीत्व है।

55. माता-पिता का जीवन व्यक्तित्व से सफल है। आहार, विहार, व्यवहार ही व्यक्तितत्व है।

56. पुत्र का जीवन नैतिकता के प्रति निष्ठा से सफल है।

57. तन, मन, धन का उत्पादन, सदुपयोग एवं सुरक्षा ही नैतिकता है।

58. व्यवस्था, न्यायपूर्ण नियम के समर्थन व पालन से सफल है।

59. भाई या बहन का जीवन, एक दूसरे के अनन्य जागृति की आशा से तथा स्नेह सहित दायित्व वहन करने से सफल है।

60. मित्र का जीवन, परस्पर उदारता पूर्ण, समृद्धि सहित सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करने से सफल है।

61. किसी को नकारना नहीं तथा सार्थकता का शोध करते रहना – शान्त रहने का गुरु मंत्र।

62. स्वयं की उपयोगिता को सिद्ध करना ही तृप्ति का आधार व प्रमाण है।

63. भाषा वही है, जिससे न्याय, धर्म व सत्य का भास हो।

64. अच्छा आदमी – स्वयं गलती नहीं करना, दूसरों की गलतियों को ठीक करने की क्षमता रखना।

65. शिष्य को अर्थ बोध होना ही गुरु दक्षिणा है।

66. गुरु का सम्मान, शिष्य के द्वारा दूसरों को अर्थ बोध करना है।

67. अर्थ बोध मानव से मानव को होगा। अध्ययन से होगा। पुस्तकें मात्र सूचनाएं हैं।

68. मानव अपने महत्व को जानने, पहचानने के लिये हर इकाई को समझने का प्रयास करता है।

69. भ्रम मुक्ति (मोक्ष) – भूतकाल के स्मरण से तथा भविष्य की आशा से पीड़ा नहीं, वर्तमान से विरोध नहीं।

70. भक्ति अर्थात भय से मुक्ति।

71. जीवन सदा सुख की पिपासा से तृषित रहता है।

72. संसार में केवल प्रकाश ही प्रकाश है। अंधेरा अर्थात छाया अर्थात कम प्रकाश जिसमें हमारी आँख देख न सके।

73. संसार में केवल सुख ही सुख है। दुःख मात्र हमारी समझ में कमी की सूचना है।

74. शरीर अपने मूल रूप में स्वस्थ ही होता है, बीमारी मात्र शरीर में अव्यवस्था की सूचना है।

75. बलवान का जीवन दया पूर्वक सफल हुआ है।

76. बुद्धिमान का जीवन विवेक तथा विज्ञान पूर्वक सफल होता है।

77. रूपवान का जीवन, सत्चरित्रता पूर्वक जीने से सफल होता है।

78. पदवान का जीवन, न्याय पूर्वक जीने से सफल होता है।

79. धनवान का जीवन, उदारता पूर्वक जीने से सफल होता है।

80. विद्यार्थी का जीवन निष्ठा पूर्वक जीने से सफल होता है।

81. सहयोगी का जीवन कर्त्तव्य का निर्वाह करने से सफल होता है।

82. तपस्वी का जीवन संतोष पूर्वक जीने से सफल होता है।

83. लोकसेवक का जीवन, स्नेह पूर्वक जीने से सफल होता है।

84. रोगी तथा बालक, आज्ञा पालन पूर्वक सुखी होता है।

85. ईश्वर में प्रेम पूर्वक मानव जीवन सुखी होता है।

86. साथी का जीवन, दायित्वों का निर्वाह करने से सफल होता है।

87. रूप, बल, बुद्धि व्यक्तिगत सम्पत्ति है।

88. जन, धन एवं यश यह कौटुंबिक और अखंड समाज की संपत्ति है।

89. पवित्र विचार ही मनोबल है।

90. प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही न्याय का याचक है। न्याय को न समझ पाने से दुःख पाता है।

91. स्वतंत्रता का अर्थ अपने को वातावरण के सभी आयामों में संगीतमय (तालमेल) रूप में प्रमाणित करना है।

92. जीवन बल एवं शक्तियों की संगीतमयता (तालमेल) व एकसूत्रता ही सुख है।

93. जिसकी पात्रता एवं योग्यता किसी मानव में न हो, उसे मानव के पास उस वस्तु की उपलब्धि का अर्थ ही है 'शोषण

द्वारा संग्रह'।

94. जो जिसका मूल्यांकन नहीं कर सकेगा, वह उसका सदुपयोग नहीं कर सकेगा।

95. दुरुपयोग ही दुःख है, सदुपयोग ही सुख है।

96. संबंध में भाव पक्ष का तिरस्कार ही संबंध का शोषण है।

97. मनुष्य संबंध को न समझ पाने के कारण दुःखी हो रहा है, न कि वस्तु, वाहन आदि से।

98. शोषक का शुष्क होना अनिवार्य है, क्योंकि क्रिया की प्रतिक्रिया होती है।

99. जिसका शोषण होता है, वह शुष्क हो जाता है।

100. सम्पूर्ण मानव जाति के समस्त दुःखों का एक ही कारण है – भ्रमवश स्वयं को शरीर मानकर जीना।

101. मनुष्य कर्म करते समय स्वतंत्र तथा फल भोगते समय में परतन्त्र है।

102. पशु कर्म करते समय भी और फल भोगते समय भी परतन्त्र है।

103. जाग्रत मानव कर्म करते समय भी तथा फल भोगते समय भी स्वतन्त्र है।

104. दूसरों के कष्ट, दुःख, वेदना एवम् संकट के प्रति मानव में संवेदना होती ही है, जो ज्ञानानुभूति की सक्षमता अथवा संभावना के कारण है।

105. अजाग्रत (नासमझ), जाग्रत (समझदार) के लिए स्वयं की समझ को प्रमाणित करने के लिए अवसर है।

106. अज्ञान, अत्याशा तथा अभाववश ही मनुष्य अपराध करता है और अविवेकवश ही अपव्यय करता है।

107. समाज की अखण्डता, मानवीयता की समृद्धि पर निर्भर करती है।

108. नासमझ को समझदार बनाना ही समाज का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

Nagraj

Praneta :-Madhyasth Darshan
(Sah-Astitwawad)

Bhajnashram, Narmadanchal
P.O. - Amarkantak - 484886
Distt. Shahdol (M.P.)